राग-परिचय

राग-यमन

सबहि तीवर सुर जहाँ, वादी गंधार सुहाय।
अरू संवादी निषाद ते, ईमन राग कहाय॥

–रागचन्द्रिकासार

राग यमन 'कल्याण थाट' से उत्पन्न है। इसका वादी स्वर गंधार (ग) तथा संवादी स्वर निषाद (नि) है। इसमें सातों स्वर का प्रयोग होता है, इसलिए इसकी जाति संपूर्ण-संपूर्ण है। इसमें मध्यम म स्वर तीव्र तथा शेष स्वर शुद्ध लगते हैं। इसका गायन समय रात्रि का प्रथम प्रहर है। इस राग में जब शुद्ध मध्यम का प्रयोग किया जाता है, तब इसे 'यमन कल्याण' कहा जाता है।

आरोह : सारेग, मपं, ध, निसां।

अवरोह : सांनिध, प, मेग, रेसा।

पकड़ : नि़रेगरे, सा, पमेग, रे, सा।

आलाप : नि़रेग – रेसा, नि़ध़-नि़ध़प़-पध़नि, धनिरे-गरे- नि़रेसा – गरेसा- नि़रेसा- नि़रेग -रेग –मेग, – रेग, – नि़रेसा – सा, – नि़रेसा – निरेगमेपधनिसां – धनिरेंसा – निरेंग – रेंसा, – निधप, – रेगरेसा – धनिरेसा – गगपधप – सां – निरेंसा – निरेंगरेंसा –, निधप – मेप, निधप –, मेपधपमेगरे, गरे –, निरेसा–

राग-यमन

धन्य-धन्य ब्रज ग्राम सखी री ! रास रचत जहाँ कृष्ण मुरारी ।
धन्य वे पक्षी धन्य वे गउएं, धन्य-धन्य नर-नारी सखी री ।
परम मनोहर लीला निरखत, राधे कृष्ण की नई-नई री ।

त्रिताल-मध्यलय

स्थाई :

सां-नि ध	प प ग मे	प-ग म रे	नि रे सा -
ध ऽ न्य ध	ऽ न्य ब्र ज	ग्रा ऽ म स	खी ऽ री ऽ
0	3	x	2
नि - रे रे	ग ग मे गमे	प-ग रे	नि रे सा-
रां ऽ स र	च त ज हाँऽ	कृ ऽ एण मु	रा ऽ री ऽ
0	3	x	2

अंतरा:

प- ग ग	प - सां ध	सां - नि ध	नि रें सां-
ध ऽ न्य वे	प ऽ क्षी ऽ	ध ऽ न्य वे	ग ऊ एँ ऽ
0	3	x	2
सां-गं रें	सां नि ध प	ग मे प मे	ग रे सा-
ध ऽ न्य ध	ऽ न्य न र	ना ऽ री स	खी ऽ री ऽ
0	3	x	2
नि नि प ग	प- नि ध	सां - सां-	गं रें सां सां
प र म म	नो ऽ ह र	ली ऽ ला ऽ	नि र ख त
0	3	x	2
नि रें गं रें	सां नि ध प	ग मे प मे	ग रे सा-
रा ऽ धे ऽ	कृ ऽ एण की	न ई ऽ न	ई ऽ री ऽ
0	3	x	2

स्थाई की तानें :

1. ध ऽ न्य ध ।	ऽ न्य ब्र ज ।	निरे गमे पध निसां । निध पमे गरे सा-	
0	3	x	2
2.	।	पध निसां निध पमे । गमे पमे गरे सा-	

अंतरा की तानें

3. ध ऽ न्य वे। प ऽ क्षी ऽ — सांनि धप मेग रेसा। निरे गमे पध निसां।

4. — निनि धप मेग रेसा। निरे गमे पध निसां।

राग-विलावल

मृदु मध्यम तीवर सबहिं सुर सोहत जेहि माँहि।
ध-म वादी संवादी है, कहत विलावल ताहि॥

— रागचन्द्रिकासार

विलावल राग 'विलावल थाट' से उत्पन्न है। इसमें सातों स्वर शुद्ध लगते हैं। इसकी जाति सम्पूर्ण-सम्पूर्ण है। इसका वादी स्वर धैवत (ध) तथा संवादी स्वर गंधार (ग) है। इसका गायन समय प्रातःकाल का प्रथम प्रहर है।

आरोह : सा, रे, ग, म, प, ध, नि, सां।

अवरोह : सां, नि, ध, प, म, ग, रे, सा।

पकड़ : गमरे, गपध, निसां।

आलाप :

सा - निध़-, निध़ -, प़-, सा-, सारेसा-, सारेगमरे-, सा-, गरे ग- प-, धनि ध प-, मग-, मरे- गमप-, मग-, मरे-, सा-, गप, धनि - धप-, धनिसां - निध - प -, धनिधप -, ध - मग -, मरे, गमपग -, मरे - सा - , षपधनिसां - , गंमरें - गंमंपंगं - मरें - , सांनिधप - मग - मरे - गमपगमरे - सा- ।

राग - विलावल

बेगि दरस दो कृष्ण मुरारी, गोवर्धन गिरधारी।
मोर मुकुट छवि, वंशी धुन पर, मोहत ब्रज के सब नर नारी।

तीनताल (मध्यलय)

स्थाई :

सां - ध प	म ग म रे	ग म प ग	म रे सा -
बे ऽ गि द	र स दो ऽ	कृ ऽ ष्ण मु	रा ऽ री ऽ
0	3	x	2
ग - म रे	ग प नि नि	सां - रें सां	नि ध प -
गो ऽ व र	ध न गि र	धा ऽ ऽ ऽ	री ऽ ऽ ऽ
0	3	x	2

अंतरा :

प – प प	सां सां सां सां	सां – सां –	सां रें सां सां
मो ऽ र मु	कु ट छ वि	वं ऽ शी ऽ	धु न प र
0	3	X	2
सां – गं मं	गं रें सां नि	ध नि सां नि	ध प म ग
मो ऽ ह त	ब्र ज के ऽ	'स ब न र	ना ऽ री ऽ
0	3	X	2

स्थाई की तानें :

1. बे ऽ गि द । र स दो ऽ । सारे गप धनि सारें । सांनि धप मग रेसा ।
2. सारे गरें सांनि धनि । सांनि धप मग रेसा ।

अंतरा की तानें :

1. मो ऽ र मु । कु ट छ वि । गप धनि सारें सांनि । धप गप धनि सां
2. गप धनि सांऽ, गप । धनि सांऽ, गप ध-

राग – भूपाली

आरोही-अवरोही में सुर म-नि दीन्हे त्याग ।
ध-ग वादी-संवादि ते कह भूपाली राग ।

–रागचन्द्रिकासार

भूपाली राग 'कल्याण थाट' से उत्पन्न हुआ है । इसके आरोह तथा अवरोह में मध्यम (म) तथा निषाद (नि) स्वर वर्जित है, इसलिए इसकी जाति औड़व-औड़व मानी जाती है । इस राग का वादी स्वर ग तथा संवादी स्वर ध है । इसका गायन समय रात्रि का प्रथम प्रहर है ।

आरोह : सा रे ग, प, ध, सां ।

अवरोह : सां, धप, ग, रे, सा ।

पकड़ : गरे, साध्, सारेग, पग, धपग, रे, सा ।

आलाप :

सा – , गरे सा – , साध् सा रे ग, रे ग –, पग –, धपग –, गपधसां – , सां ध प ग–, धपग, पग –, रेग – रेसा – , साध्सारेग – , पगधपग – सां – , धपग, रेंरेंसां – , धपग, गंगरेंसां – धपग – ,,गपधसारेंगरेंसां – धपग, पग – , रेग – रेसा –, साध् – , सारेग –।

राग-भूपाली

लाज बचाओ मुरारी।
तुम बिन और न दूजो कोई, बीच भंवर में आन फंसी अब।
नैया मोरी डगमग डोले, पार लगाओ शरण तिहारी।।

तीनताल-मध्यलय

स्थाई :

सां – ध प	ग रे सा –	सा ध़ सा रे	ग रे ग –
ला ऽ ज ब	चा ऽ ओ ऽ	कृ ऽ ष्ण मु	रा ऽ री ऽ
0	3	x	2
ग प ध सां	रें सां ध प	सां प ध प	ग रे सा –
तु म बि न	औ ऽ र न	दू ऽ जो ऽ	को ऽ ई ऽ
0	3	x	2

अंतरा:

ग – ग ग	प प सां ध	सां – सां सां	सां रें सां सां
बी ऽ च भं	व र में ऽ	आ ऽ न फं	सी ऽ अ ब
0	3	x	2
ध – ध –	सां – रें –	सां रें गं रें	सां रें सां ध
नै ऽ या ऽ	मो ऽ री ऽ	ऽ ग म ग	डो ऽ ले ऽ
0	3	x	2
सां – गं रें	सां रें सां–	सां सां ध प	ग रे सा –
पा ऽ र ल	गा ऽ ओ ऽ	श र ण ति	हा ऽ री ऽ
0	3	x	2

स्थाई की तानें :-

1. ला ऽ ज ब । चा ऽ ओ ऽ । सारे गप धसां पध । सांसां धप गरे सा-
2. । पधसां, पधसां, पध । सांसां धप गरे सा-

अंतरा की तानें :-

1. बी ऽ च भँ । व र में ऽ । सांसां धप गरे सा- । सारे गप धध सां-
   सारे गग रेग पप । गप धध पध सांसां

राग-भैरव

भैरव कोमल रि-म-ध सुर, तीख गंधार निषाद।
धैवत वादी सुर कष्यो, तासु ऋषभ संवाद ।।

-रागचन्द्रिकासार

राग भैरव, 'भैरव थाट' से उत्पन्न होता है। इसमें सातों स्वर लगते हैं, अतः इसकी जाति संपूर्ण-संपूर्ण है। इसमें ऋषभ (रे) तथा धैवत (ध) स्वर कोमल लगते हैं तथा शेष स्वर शुद्ध लगते हैं । इसका वादी स्वर ध तथा संवादी स्वर रे है । इसका गायन समय प्रातः काल माना जाता है। कभी-कभी इस राग के अवरोह में कोमल निषाद (नि) का प्रयोग सुंदरता के लिए विवादी स्वर के नाते किया जाता है।

आरोह :- सा<u>रे</u>, गम, प<u>ध</u>, निसां ।

अवरोह :- सां<u>नि</u>, <u>ध</u>, पमग, <u>रे</u>सा ।

पकड़ :-सा, ग, मप, <u>ध</u>, प ।

आलाप :- सा - - , <u>रे</u> - <u>रे</u> -, सा - - , <u>ध</u>- - -, सा - -,
<u>रे</u> - सा - -, गरे - , म ग <u>रे</u> - -, सा - , साग -,
मप - - <u>ध</u>, मप - -, मग<u>रे</u> - -, गमपग<u>रे</u>-,
सा - -, निसा गम पग - - म -, <u>ध</u> - - निसां - -,
सा<u>रें</u>सां<u>नि</u><u>ध</u>, सां<u>नि</u><u>ध</u> -, नि<u>ध</u>प, मप- मग-म<u>रे</u>,
गमप, मग- म<u>रे</u> सा - - प<u>ध</u> - निसां - -, सां, निसां-
<u>ध</u>निसां - <u>रें</u>सां-, निसां-<u>ध</u>-प-, मंम<u>रे</u> - सां - -,
<u>रें</u>-<u>सांनिसां</u>-<u>ध</u> - प, मग - मप-, <u>ध</u> - प - मग<u>रे</u> - सा- ।

राग-भैरव

प्रात भयो जागो यदुराई ! मुनि-जन ध्यान करत तुम्हरो ही प्यारे कृष्ण कन्हाई ।
अन्तर : चिड़ियाँ चहक-चहक गुण गावें, पत्ते हिल-हिल शीश झुकावें ।
चलती त्रिविध समीर सुहावन, अनुपम शोभा छाई ।

(त्रिताल-मध्यलय)

स्थाई :

ग म <u>ध</u> <u>ध</u>	प - <u>ध</u> म	<u>ध</u> - पम प	म - ग -
प्रा ऽ त भ	यो ऽ जा ऽ	गो ऽ यऽ दु	रा ऽ ई ऽ
0	3	x	2

ग ग म ग	रे – ग प	म ग म ग	रे – सा –
मु नि ज न	ध्या ऽ न क	र त तु म्ह	रो ऽ ही ऽ
0	3	x	2
नि सा ग म	प ध नि सां	रें – सां नि	ध प म –
प्या ऽ रे ऽ	क ऽ एण क	न्हा ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ई ऽ
0	3	x	2

अंतरा :

प घ प –	ध ध नि नि	सां सां सां सां	रें – सां –
चि ड़ि याँ ऽ	च ह क च	ह क गु ण	गा ऽ वे ऽ
0	3	x	2
ध – ध –	नि नि सां सां	रें – सां सां	नि सां ध प
प ऽ त्ते ऽ	हि ल हि ल	शी ऽ श झु	का ऽ वे ऽ
0	3	x	2
ग म प ध	सां नि ध प	म ग म ग	रे – सा सा
च ल ती ऽ	त्रि वि ध स	मी ऽ र सु	हा ऽ व न
0	3	x	2
नि सा ग म	प ध नि सां	रें – सां नि	ध प म –
अ नु प म	शो ऽ भा ऽ	छा ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ई ऽ
0	3	x	2

स्थाई की तानें :

1. प्रा ऽ त भ । यो ऽ जा ऽ । निसा गम पध सां – । निध पम गरे सा–
   गम पध निसां रेंसां । निध पम गरे सा–

अंतरा की तानें

1. चि ड़ि यॉ ऽ । च ह क च । सांनि धप मग रेसा । सारे गम पध निसां
2. । धनि सारें सांनि धप । मग मप धनि सां –

राग – काफी

काफी दोनों राग थाट, गनि कोमल सब शुद्ध ।
प वादी संवादी षड़ज, सप्त स्वरों से युक्त ॥

काफी राग की उत्पति काफी थाट से होती है। इसमें गंधार (ग) और निषाद (नि) स्वर कोमल लगते हैं, तथा अन्य स्वर शुद्ध लगते हैं। इसका वादी स्वर 'प' तथा संवादी स्वर 'रे' माना जाता है। इसकी जाति संपूर्ण-संपूर्ण है। इसका गायन समय मध्यरात्रि है। चंचल प्रकृति का राग है।

आरोह : सा रे ग॒ , म प, ध॒ नि॒ सां।

अवरोहः सां नि॒ ध, प, म ग॒, रे सा।

पकड़ : रे प, म प, ग॒ रे, ममप ऽ। सस, देरे, गग, मम, व

आलाप :

सा,- नि॒सा, - सारेग॒रे-, रेपमप - ग॒ रे -, रेग॒म --, ग॒मप-, मप --, ग॒रे --, रेग॒मग॒ - - रे नि॒ ध॒ ध॒ सा - रे म प ग॒ रे - रेमपध - -, नि॒धप -- नि॒ध - पम - पम, पधनि॒सा - परें - रें - सारेंग॒रें -, नि॒ ध म - प ध नि॒ --, धनि॒सां -- नि॒सां, नि॒धग॒रें -- सारें -- सारें -- नि॒धप -- मपग॒रे -- रेपमप -- ग॒रे -, रेध --, धनि॒धप -, मपधमप -- ग॒ रे -- सारेसा -- नि॒धसा।

राग - काफी

स्थाई : आज कैसी वृज में धूम मचाई।
पिचकारी रंग उड़त है सारी ॥

अन्तरा : वृन्दावन की सुंदर शोभा।
चकित भई सब नारी आज ॥

स्थाई :

ग॒ म ध प	ग॒ ग॒ रे -	ग॒ सारे॒ म म	प - प -
आ ज कै सी	वृ ज में ऽ	पू ऽऽ म म	चा ऽ ई ऽ
0	0	3	x
नि॒ पध॒ (सां) -	नि॒ ध म प	रे म पध॒ मप	ग॒ - रे, म
पि चऽ का ऽ	री ऽ रं ग	उ ड़ तऽ है ऽ	सा ऽ री, आ
2	0	3	x

अंतरा :

म म प ध	सां नि॒ सां -	धसां रें॒ रें सां	नि॒सां - नि॒ ध प
वृ ऽ न्दा ऽ	व न की ऽ	सु ऽऽ न्द र	शोऽ ऽऽ भा ऽ
0	3	x	2

ध ध ध ध	नि – ध प	ग – रे, म	ग म ध प
च कि त भ	ये ऽ स ब	ना ऽ री, आ	ऽ ज कै सी
0	3	x	2

स्थाई की तानें :-

1. आ ज कै सी । वृ ज में ऽ । धू ऽऽ म म । सारे गरे सासा, सारे । गम गरे सा–, सारे गम प,म गरे सा – । सारे गम पम निसां ।
2. आज कै सी । वृ ज में ऽ । धू ऽऽ म म । पप मप निध पम । गरे सा – सारे गरे गम गम पम पध । निध पम गरे सा–।

अंतरा की तानें :

1. वृ ऽ दा ऽ । व न की ऽ । सांनि सांनि धप मग । रेसा, सांनि धनि सां–
2. । निसां रेंगं रेंसां । निध पम गरे सा–

1. प्रश्न : राग से क्या समझते हैं ? राग यमन का परिचय लिखें ।
2. प्रश्न : राग यमन और विलावल में क्या अंतर है ?
3. प्रश्न : राग भूपाली किस थाट से उत्पन्न हुआ है ? इसका आरोह-अवरोह लिखें ।
4. प्रश्न : राग भैरव का पूर्ण परिचय लिखें ।
5. प्रश्न : राग की बंदिश लिखते हुए उसकी स्वरलिपि दें ।

◆◆◆